वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

“ बांस उत्पादन एवं उपयोग” विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी/ प्रशिक्षण

दिनांक – 30.06.2022 **स्थान - हसबेरा, कर्रा (खूंटी)**

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, उप वन संरक्षक , श्री एस.एन.वैद्य, मु.त.अ.,श्री निसार आलम, मु.त.अ. एवं श्री बी.डी.पंडित, त.अ. के एक दल द्वारा दिनांक 30.06.2022 को “बांस उत्पादन एवं उपयोग” विषय पर खूंटी,कर्रा के हसबेरा ग्राम में संगोष्ठी / प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें दीन दयाल उपाध्याय ग्राम स्वावलम्बन समिति के श्री सुनील शर्मा के अलावा काफी संख्या में महिला पुरुष शामील हुए। श्री रवींद्र कच्छप सेविका शिल्प कला सहकारी सहयोग समिति लिमिटेड, बुण्डु एवं श्रीमती मीरा देवी आदर्शबार कारीगर समिति केलो (खूटी) द्वारा क्रमश: बास का सोफा एवं घरेलू उपयोग के बांस उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण देने हेतु कार्यक्रम में भाग लिया। श्री बी.डी.पंडित द्वारा स्वागत एवं कार्यक्रम परिचय के बाद कार्यक्रम के अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय ग्राम स्वावलम्बन समिति के श्री सुनील शर्मा ने ग्रामीण के लिए बांस वस्तु निर्माण का प्रशिक्षण देकर आजिवीका सृजन किये जा रहे वन उत्पादकता संस्थान के प्रयास की सराहना की।

संस्थान की श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, उप वन संरक्षक ने उपस्थित महिलाये एवं पुरुषों को कार्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए बांस के विभिन्न उपयोग को बताया एवं बांस रोपण कर बांस के उत्पाद बनाकर आत्मनिर्भर भारत बनाने का आह्वान किया। उन्होने बताया कि 100-200 रुपये के एक बांस से 1000-2000 रुपये का सामान तैयार किया जा सकता है जो घर बैठे रोजगार का साधन बन सकता है। बांस से निर्मित बस्तु का विस्तृत बाजार है। बांस बहुत ही उपयोगी वनस्पति है जिसे घास प्रजाती में रखा गया है जो जीवन से लेकर मृत्यु तक मानव जीवन के उपयोग में आता है।

बांस शिल्पकार श्री रवींद्र कच्छप एवं श्रीमती मीरा देवी की उपस्थिति में आप सभी लोग बांस उत्पाद बनाना सिखेंगे। जागरुक प्रतिभागियो को उच्च प्रशिक्षण की भी व्यवस्था सम्भव है यदि 10-20 ग्रामीण जागरूक हों। बांस का मूल्यवर्धन कर देश की अर्थ व्यवस्था मजबूत करें। बांस शिल्पकार श्री रवींद्र कच्छप ने ग्रामीणों को बांस का सोफा बनाने का प्रशिक्षण दिया जिसे ग्रामीणों ने लगन से सीखा एवं लगन से पूर्ण किया। उन्होने तीन सीट तथा एक सीट वाला सोफा बनाने के लिए कम से कम पांच दिन प्रशिक्षण देने का आग्रह किया।

बांस शिल्पकार श्रीमती मीरा देवी ने हैंगिग लैम्प एवं अन्य घरेलु उपयोग होने वाली सामग्री को बनाने के लिए ग्रामीणों को बताया। इस कार्यक्रम में संस्थान के श्री एस.एन.वैद्य, मु.त.अ., श्री निसार आलम, मु.त.अ. एवं श्री बी.डी.पंडित, त.अ. का सराहनीय योगदान रहा। श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, उप वन संरक्षक ने सभी को धन्यवाद किया एवं कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)